International Journal of Scientific Research in Science, Engineering and Technology (www.ijsrset.com)
© 2014 IJSRSET | Volume 1 | Issue 1 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099

आज के युग में महाकाव्य युगीन संस्कार

बिन्दु

शोधच्छात्रा,

इतिहास विभाग,

पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत।

सारांश- महाभारत महाकाव्य हमारे समाज का ऐतिहासिक दर्पण कहा जा सकता है। मानव गाँव के जीवन में घटने वाले विविध प्रसंगों में ममता, दया, उदारता, क्षमा, प्रेम, सहिष्णुता आदि के आधार पर जब हमने अपने लोक नायकों-नायिकाओं को केंद्र में लेकर अपने विचार भाव प्रकट करते हैं तो उसके साथ-साथ युगीन प्रवृतियाँ भी मुखर हो उठती हैं। इन युगीन प्रवृत्तियों में हमारे जीवन-दर्शन को दिशा देने की अपार संभावनाएं होती हैं। भगवान् कृष्ण एवं राधा जी लोक में बहुख्यात नायक-नायिका माने जाते हैं जिन पर केन्द्रित हम कई आख्यान देखते रहे हैं।

प्रमुख शब्द- अहिंसा, प्रेम, सदाचार , नरकावास, अभिशाप, मानवीय प्रवृत्ति, सांसारिक ज्ञान, रीति रिवाज , हेय दृष्टि , रीति नीति , संवेदना ।

जब भी आदर्श प्रेम की चर्चा होती है तो सबसे पहले जिस प्रेम संबंध का नाम हमारे मनोस्मृति और हृदयपट पर आती है वह है आदर्श प्रेमी युगल के रूप में राधा-कृष्ण का प्रेम, आदर्श भाइयों के प्रेम के रूप में राम-भरत और राम-लक्षण, आदर्श प्रेमी दम्पत्ति के रूप में राम-सीता, आदर्श पुत्र के रूप में श्रवणकुमार। परन्तु आज यह आदर्श पात्र केवल मिथकों के काल्पनिक पात्र बन कर ही रह गये हैं। आज भी इनकी चर्चा होती है, कई बार इनके उदाहरण भी दिये जाते हैं परन्तु फूस के बने घर के समान होता है इनका उदाहरण।

कहते हैं राधा-कृष्ण संसार को प्रेम समझाने के लिए ही इस धरा पर अवतरित हुए थे और उनका प्रेम इतना पावन था कि कृष्ण की पूजा रूक्मिणी जो उनकी पत्नी थी उनके साथ से अधिक उनकी प्रेमिका राधा के साथ की जाती है। क्या इस प्रेमी युगल की पूजा इसलिए की जाती है क्योंकि वह देव-देवी थे। अगर उन्हें देव-देवी ही माना जाता है तो फिर कृष्ण अपने दैवशक्ति से पूरे संसार के मन में अहिंसा, प्रेम, सदाचार का भाव उत्पन्न कर सकते थे। **''न्याय की स्थापना, सत्य का पाठ, धर्म का ज्ञान देने के लिए महाभारत जैसे भीषण युद्ध की आवश्यक की नहीं होती। द्रौपदी को पूरे संसार के सामने निर्वस्त्र न होना पड़ता। अश्वथामा को सृष्टि के अन्त तक नरकावास का अभिशाप न मिलता। लेकिन मानव होकर मानव की तरह व्यवहार कर, मानवीय प्रवृत्ति के आधार पर जीवन व्यतीत कर, मानव को सांसारिक ज्ञान प्रदान करने के लिए, भगवान ने भी मानवी रीति-रिवाज में बंधकर दैव महिमा और गुण का त्याग कर साधारण मानव को साधारण मानव होने और मानवीय गुणों के साथ जीवन व्यतीत करने का पाठ पढ़ाये।[1]''**

इसलिए राधा-कृष्ण को साधारण प्रेमी-युगल मानने में कोई संकोच नहीं परन्तु वर्तमान समय में अगर किसी के प्रेम प्रसंग की बात सामने आती है तो सबसे पहले उसे हेय दृष्टि से ही देखा जाता है। साक्षर हो या निरक्षर सभी के नजरों में यह एक नीच कार्य समझा जाता है। कुछ लोग ऐसे होते हैं जो कुछ समय के प्रयत्नों के बाद इस रिश्ते को अपना लेते है परन्तु सौ प्रतिक्षत दिल से इस संबंध को स्वीकारने वाला इस संसार में एक प्रतिक्षत लोग भी मुश्किल से मिलेंगे। किसी के दर्द को देख कर आहे भरना, उसकी चर्चा करना,

उसके प्रति संवेदना व्यक्त करना एक बात है और सामने बढ़ कर उसका साथ देना दूसरी बात। आज लोगों की प्रवृत्ति यह हो गई है कि चर्चा और आलोचना से ही उन्हें फुर्सत नहीं मिलती कि वह उस विपत्ति में पड़े व्यक्ति को उसके विषम स्थिति से निकाल सके।

यह सच है कि आज प्रेम का स्थान मोह और आकर्षण ने ले लिया है। वर्तमान समय में प्रेम की परिभाषा ही बदल गई है। आजकल पचानवे प्रतिक्षत प्रेम संबंध स्वार्थ के रंग में सन कर हर रोज बनते और टूटते हैं। एक दिन किसी से मिलना, दो दिन व्याट्सअप-फेसबुक में बात करना, चार दिन किसी के साथ घुमना ही आज प्रेम की परिभाषा है। एक दिन के मिलने से शुरू हुआ प्रेम दसवे दिन किसी होटल के कमरे में चादर के सिलवट के साथ दम तोड़ देती है। कभी दोनों इस रिश्ते को भूल जाते हैं तो कभी एक का भूलना दूसरे की अर्थी बन जाती है, एक की बेवफाई दूसरे को प्रेम शब्द से ही दूर कर देती है यही आधुनिक प्रेम की सच्चाई और नियति है। परन्तु जौ के साथ घुन के समान पीसता इस मोहसागर में कुछ सीप ऐसे भी होते है जो प्रेम की मोती को अपने हृदय सागर की गहराई में छुपाकर रखते हैं। जो मुँह से बिना कुछ कहे एक-दूसरे के अनकही को समझ लेते हैं, जो जिस्मानी आकर्षण से कहीं ऊँचा उठ कर आत्मीय मिलन की प्रतीक्षा में अपना जीवन काट देते हैं। ऐसे प्रेम संबंध में भी संसार वालों की प्रतिक्रिया क्यों सम्मानित या संवेदनशील नहीं होती? अकेले में किसी का मिलना कलंक के रूप में देखा जाना, किसी से प्राय: मिलना लोगों के नजरों में चुभना, किसी से प्रेम करना हेय कार्य क्यों समझा जाता है? आज इस संसार में ऐसे कितने लोग मिलते है जो अपने पति या पत्नी के प्रेमी या प्रेमिका की बात जान उसे सम्मान करे, उसके प्रेम और प्रेमी/प्रेमिका को सम्मान की दृष्टि से देखे; उनके प्रेम को आदर्श समझे! दूसरे ऐसे पति/पत्नी के शादी से पहले के प्रेम को संवेदनात्मक दृष्टि से देखे! **"जिस प्रेमी युगल की पूजा की जाती है उनके प्रेम-तत्त्व को क्यों नहीं अपनाया जाता? अपना आराध्य मान उसकी सेवा में अपना जीवन बिताने वाले क्यों अपने बेटे-बेटियों के प्रेम संबंध को समझने की कोशिश भी नहीं करते? क्यों जिसके नाम की माला होठ दिन-रात जपता है उसके प्रेम तत्त्व को हृदय में स्थान नहीं दिया जाता?[2]"**

क्यों कृष्ण से पहले राधा का नाम लेने वाले अपने घर के राधा को अपने इज्जत की दुहाई देकर उसे जीवनभर के लिए किसी अनजान व्यक्ति के साथ जीवन काटने के लिए मजबूर कर देते हैं? अपनी सख्ती के कारण अपनों का श्राद्ध करना इन्हें मंजूर है लेकिन प्रेमियों की शादी करवाना इन्हें सवीकार्य नहीं। राधा-कृष्ण का मंदिर अपने घर में बनाने वाले अपने पति/पत्नी से अपने प्रेमी/प्रेमिका की चर्चा तक नहीं कर पाते क्योंकि इस राज़ के खुलने से उनका रिश्ता बिखर जायेगा। अपने रिश्ते को बनाये रखने के लिए ऐसे दम्पत्ति हमेशा अपने अतीत के राज़ के खुलने का डर अपने साथ लिए जीते हैं। लोकलाज या बच्चों के भविष्य को ध्यान में रख कर अगर ऐसे दम्पत्तियों का रिश्ता बच भी जाता है तो उनके रिश्ते का अपनापन और विश्वास-प्रेम हमेशा के लिए खो जाता है। एक बोझ की तरह इस रिश्ते को ढोते-ढोते नजरो का झुकना कंधो तक आ जाता है और अंत में ऐसे लोग अकेलेपन का शिकार होते हैं।

आज समय ऐसा है कि अपने परिवार के सभी सदस्य पर विश्वास करने से भी लोग झिझकते है। जब घर पर ही अपने विश्वास को बनाये रखने वाला नहीं तो बाहर वाले से कैसे उम्मीद की सा सकती है? आज की शत्रुता मित्रता से कहीं अच्छी है क्योंकि सामने वाला हमारा शत्रु है इस बात का ज्ञान तो पहले रहता था परन्तु आज अधिक खतरा मित्रों से ही होती है। जब किसी बच्ची का बलात्कारी उसका स्वयं का रिश्तेदार ही निकले तो अपना हम किसे क्या कहें?

"आज सबको सीता जैसी बेटी, बहु और पत्नी की कामना रहती है क्योंकि वह चुपचाप अपने पर किये हर अत्याचार को सह गई। इसलिए सब वैसी ही मूक स्त्री की कामना करते है पर उसके उस कष्ट, तकलीफ, पीड़ा, त्याग, बलिदान, समर्पण, वेदना, अपमान, लांछन की बात कोई नहीं करता जो समाज के बनाये रीति-रिवाज और ओंछि सोच के कारण उसे विरासत के रूप में मिला।[3]" भले ही कोई रावण हो परन्तु पत्नी सीता जैसी ही चाहिए। भले ही कोई कितना भी नीच, अपराधी, शराबी, जुआरी हो परन्तु पत्नी सती, पवित्र, सुशील, संवेदनशील चाहिए। 21वीं सदी में हम समानता का शोर हर ओर सुनते है, तो आज भी क्यों हर रोज बलात्कार, यौन शोषण, हत्या, आत्महत्या का शिकार बच्चियों से स्त्रियाँ तक प्राय: होती रहती है?

स्वयं भले ही अपने माता-पिता, भाई-बहन को छोड़ कर अपना अलग गृहस्थी बसा लो परन्तु बेटा आदर्शवादी चाहिए। जो इनकी बात सुने, बुढ़ापे में इनका सहारा बने, इनकी इज्जत और सम्मान करे। अपने जीवन के पन्नों को पलट कर देखना इन्हें मान्य नहीं परन्तु आगे

सुनहरे पन्नों की कामना हर किसी को रहती है। हर किसी के जीवन में कुछ घटनाएँ ऐसी होती जो पुनरावृत्ति कहलाती है पर जब किसी दूसरे के करनी का परिणाम हमें मिलता है तो इसे अपने समझ, ज्ञान, धैर्य से दूर करना ही उचित है तभी मानसिक लोभ और हिंसा का नाश हो सकता है वरना यह प्रतिशोध और प्रतिद्वंद्वतावादी परम्परा ऐसे ही चलती रहेगी।

जब कोई दूसरे का छीनता है तो महाभारत की सृष्टि होती है और जब कोई अपने हक का भी छोड़ दे तो रामायण का प्रारम्भ होता है और रामायण को ही प्राय: हर घर में धरोहर की तरह पाठ किया जाता है। इसके वर्णित कथ्यों को अपने जीवन का आदर्श भी मान लिया जाता है लेकिन क्या रामायणवादियों के कथनी और करनी में समानता होती है? चाहे गाँव हो या शहर, देश हो या विदेश वर्तमान समाज में कितने ऐसे परिवार है जो एकल परिवार का उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं! **''राम के राज्य त्याग कर वन जाने के बाद अपने भाई के चरण पादुका को अपने माथे में सजाकर राजसिंहासन पर धर कर, अपने राजा होने के पद का त्याग कर चौदह वर्षों तक अपने भाई का प्रतीक्षा करता रहा भरत। राम के लौटने के बाद बड़े भाई का हक उसे सौंपकर भरत एक आदर्श भाई का मिसाल कायम करता है।[4]''**

उसी भरत के भातृ प्रेम का बखान करते हुए समाज में जब कोई अपने भाई से यह सवाल करता है 'आपने हमारे लिए किया ही क्या है?' पिता के स्थान पर अपने परिवार के लिए अपनी ख्वाइशों को भूल कर अपने छोटे भाइयों का सपना पूरा करने के लिए जो असमय में ही बुढ़ा हो गया उस भाई के सीने में यह सवाल किस तरह शूल की तरह चूमता है इसका अंदाजा भी आज के लक्षण-भरत को नहीं। यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। मुँह में एक और मन में दूसरा रखना मनुष्य मात्र की प्रवृत्ति है परन्तु पशुओं में ऐसा कुछ नहीं पाया जाता। उनके भाव और क्रिया दोनों में समानता होती है। तो क्या हम पशुओं के श्रेणी से भी नीचे हैं? नहीं। मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ प्राणी इसलिए कहा गया है क्योंकि उसके पास बुद्धि है, सही-गलत की पहचान करने की योग्यता है। परन्तु अपने लोभ, स्वार्थ, हिंसा आदि भौतिक प्रवृत्ति के कारण वह पशुओं से भी नीच कार्य करने लगता है। सत्य-असत्य, न्याय-अन्याय, सही-गलत के परिभाषा को अपने स्वार्थ के हिसाब से बदलता रहता है। आज हमें मिथकों के आदर्श पात्रों की नहीं बल्कि अपने अंदर के इंसानियत को जगाने की जरूरत हैं।[5]

''गांधारी के अभिशाप से तो श्रीकृष्ण की पूरी द्वारका जलमग्न हो गयी थी, अगर हमारी भी यही प्रवृत्ति रही तो हमारा भी वही परिणाम हो सकता है। अपने अंतरात्मा से अपनत्व और अहिंसा के मार्ग में चल कर ही इंसानियत को बचा कर हम इस अभिशापित अमानवता से बच सकते हैं।[5]''

हम इस तरह से आज के परिवेश में परिवार एवं समाज में सकारात्मकता लाने के लिये हमारे महाकाव्यों द्वारा प्रतिपादित भावों एवं विचारों को लागू करके उसी अनुरूप परिणाम प्राप्त कर सकते हैं। समय अपने आप में हर तरह के सत्यों का अनुमोदक होता है। पुरातन ऐतिहासिक धरोहर अतीत की घटनाओं के परिणाम हमारे वर्तमान को सँवार कर अपेक्षित परिणाम दे सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ : -

1. महाभारत-आदि पर्व, अध्याय एक श्लोक 62-63 गीता प्रेस गोरखपुर

2. रामायण, महाभारत काल, इतिहास, सिद्धान्त, पृष्ठ-64, लेखक- वासुदेव पोद्दार

3. ऐज ऑफ भारत वार, पृष्ठ-104, लेखक- जी॰सी॰ अग्रवाल और के॰ एल॰ वर्मा

4. लिटरेरी एण्ड हिस्ट्रीकल स्टडीज इन इण्डोलाजी पृष्ठ-81, लेखक- वासुदेव विष्णु

5. जीवन्त महाभारत के दृष्य, पृष्ठ-12, लेखक- कृष्णा तलवार